# बाईबल की महान सच्चाइयों को जानने के लिये आपका झरोखा !




## बाईबल अध्ययन के पाठ

यह बाईबल की महान सच्चाइयों के अध्ययन का साप्ताहिक पाठ्यक्रम है जो कि आसानी से समझ में आनेवाले तरीके में उपलब्ध है।

सभी विषयों की सूची के लिये पृष्ठ संख्या - 1 पर जाएँ!

# कुछ आरम्भ की बांते विचार करने के लिये

कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।

ज्यादातर वचन अंग्रेजी की मान्यताप्राप्त किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।

➡ जब हम ईसाई होकर दुनिया को आज के समय में देखते हैं, तो हम यह देखते हैं कि पृथ्वी पर 600 करोड़ लोगों से भी ज्यादा लोग रहते हैं!6,000,000,000 या 600 करोड़!!

☞ हमें बताया जाता है कि इनमें से एक तिहाई या 200 करोड़ के लगभग लोगों को ... ईसाई माना जाता है।

☞ आगे इन में या ईसाइयों नामक इस समूह के बीच में, लगभग 750 सम्प्रदाय या प्रतिभाग हैं।

☞ इनके विश्वासों और उपदेशों में बहुत अंतर है और विविधता है और इनके विश्वासों में शायद ही कोई एकता है - यीशु के नाम को छोड़कर!

☞ सभी के द्वारा बाइबल का उपयोग बहुत ही चुनिंदा है।

☞ कई स्थानों पर बाईबल के पुराने नियम को वास्तव में नहीं पढ़ा जाता है या इसे महत्वपूर्ण भी नहीं समझा जाता है और ... परिणामस्वरूप कई जगहों पर बाइबल के केवल नये नियम ही छापे जाते हैं।

➡ यह आधे कपड़ों में बाहर जाने की तरह है!!

तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है 📖 तेरा वचन सत्य है

☞ इसलिए इस तरह की स्थिति में जो ईमानदार हैं वे एक सवाल पूछेंगे ...

☞ फिर एक ईसाई कौन है?

➡ कौन इस सवाल का जवाब देंगे?

➡ इसका उत्तर देने के लिए जो सर्वोत्तम हैं वह हैं ... खुद यीशु मसीह!

☞ हाँ ! उनसे पूछें ! और उनका उत्तर इन वचनों में देखें मत्ती 16:24-25

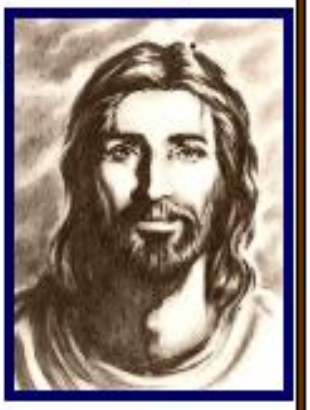

"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।"

इसका मतलब क्या है ?
ये स्वामी का शिष्य बनने की निश्चित नियम और शर्तें हैं।
और हम फिर से प्रभु के वचनों को यहाँ पढ़ते हैं -

मत्ती 10:37-39

"जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं... "

☞ इसका मतलब क्या है ?
... ये भी शिष्य बनने की शर्तें हैं।

➡

उन दिनों में स्वामी के इन चेलों या अनुयायियों को पहली कलीसिया में एक नाम मिला था, जिसके बारे में हम इन वचनों में पढ़ते हैं -

प्रेरितों 11:26

"...चेले सब से पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।"

ठीक वैसे ही जैसे ... भारत के लोगों को भारतीय ... अमरीका के लोगों को अमरीकी कहा जाता है!!

☞ वे सचमुच में मसीही थे - ये उनके जीवन , बातों और क्रियाओं में दिखाई देता था!

☞ आज दुनिया में कितने लोग सचमुच में मसीही हैं?

उन दिनों में यीशु ने हमें यह भी बताया कि एक सच्चे मसीही को परमेश्वर की "आराधना" कैसे करनी है - यूहन्ना 4:24

"...और अवश्य है कि उसकी आराधना करनेवाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।

इसका मतलब क्या है? सत्य क्या है?
हम इसका उत्तर बहुत ही सपष्टता से दर्ज किये गये इन वचनों में देखते हैं-

यूहन्ना 17:17

" तेरा वचन सत्य है।"

यह बात इतनी सरल है और फिर भी बहुत ज्यादा प्रभावशाली है! हाँ ! ये परमेश्वर के वचन हैं! -बाईबल सत्य है!

..... लेकिन कितने आजकल बाईबल के अध्ययन करते हैं?

.....क्या हमारे सभी विश्वासों का आधार बाईबल है ?

क्या हम जिस प्रकार जीवन के सांसारिक और दैनिक मामलों के बारे में गंभीर हैं उसी प्रकार बाईबल का ज्ञान प्राप्त करने के बारे में गंभीर हैं?

लेकिन कोई कहेगा - "मैंने पढ़ने के लिए कई बार कोशिश की है लेकिन बाईबल मुझे समझ में नहीं आती है।"

दूसरे कहेंगे - "मेरे पास कई संदेह और सवाल हैं और कोई भी संतोषजनक ढंग से मुझे उत्तर देने में सक्षम नहीं है।"

## तो मैं क्या कर सकता हूँ

अच्छा तो,बाइबल के लेखक से पूछते हैं!
आइये हम इन वचनों में बाईबल के लेखक के बारे में पढ़ते हैं -

2 तीमुथियुस 3:16;इब्रानियों 1:1,2

"सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।"

"पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें की, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उस ने सारी सृष्टि की रचना की है।"

हाँ! स्वयं परमेश्वर से पूछते हैं! क्योंकि वह स्वयं ही ..... लेखक हैं!

लेकिन आप सोच सकते हैं - "क्या मैं पूछ सकता हूँ? क्या यह संभव है?" इसके उत्तर में, आइये हम यीशु के शब्दों में बाईबल संबंधी वादा देखते हैं जैसा की इन वचनों में पढा जाता है -

मत्ती 7:7,8

"मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा;
ढूंढो, तो तुम पाओगे;
खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।"

हाँ ! ये बहुत बड़े आत्मिक वादे हैं उनके लिये जो ढूंढते है -

" क्योंकि जो कोई माँगता है , उसे मिलता है ... "

इस प्रकार की, हम सभी के लिए प्रभु की गारंटी है!!

अब, आप अगला सवाल यह पूछ सकते हैं,परमेश्वर हमें कैसे सिखाते हैं?
हम उस बात के उत्तर को इन वचनों में पढ़ते हैं -

यूहन्ना 6:45

"भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह लिखा है कि: वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे ..."

हाँ! परमेश्वर स्वयं ही आपको सिखाएंगे,अपने दासों के माध्यम से जिनको वे आपकी प्रार्थनाओं के उत्तर में भेजते हैं...

इसलिये,ऐसे दासों से मुलाकात और बाईबल की पढाई की शुरुवात होने में पूरी तरह परमेश्वर का ही हाथ है और उनके दासों का या अपना खुद का कोई हाथ नहीं है!

अंत में सभी मसीहियों के लिये एक महत्वपूर्ण चेतावनी है जिसे की हम इन वचनों में पढ़ते हैं -

2 तीमुथियुस 2:15

"अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य [ठहराने के लिये पढ़ो] और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

हाँ! बाईबल में पढ़ने के लिये बहुतायत में है और बहुत कुछ है!

यहाँ कुछ दिलचस्प सवाल हैं -

उत्पत्ति पहला अध्याय ⇨

परमेश्वर के रचनात्मक कार्यों में लगे दिनों के एक दिन कितने लम्बे थे?
क्या वे 24 घंटों के एक दिन थे? आइये हम इस वचन में से पढ़ें-

उत्पत्ति 1:5

"और परमेश्वर ने उजियाले को दिन और अन्धियारे को रात कहा। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहला दिन हो गया।"

इस वचन में सांझ और भोर का क्या मतलब है? क्या साँझ से भोर तक केवल बारह घंटे हैं !!

इस प्रश्न का उत्तर क्या है ? उसके बाद हम इस वचन में से पढ़ते हैं -

**उत्पत्ति 5:24**

"और हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।"

हनोक को क्या हुआ? क्या जैसे सब मरते हैं वो नहीं मरा?
उसके बाद हम इस वचन में से पढ़ते हैं -

**2 राजाओं 2:11**

"वे चलते चलते बातें कर रहे थे, कि अचानक एक अग्नि मय रथ और अग्निमय घोड़ों ने उन को अलग अलग किया, और एलिय्याह बवंडर में हो कर स्वर्ग पर चढ़ गया।"

क्या एलिय्याह ... स्वर्ग में चला गया? उसके बाद हम इस वचन में से पढ़ते हैं -

**मत्ती 9:35 / 6:10 / 10:7**

और यीशु सब नगरों और गांवों में फिरता रहा और उनके आराधनालयों में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।

और चलते चलते प्रचार करो: 'स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।'

ये राज्य क्या है? उसके बाद हम इस वचन में से पढ़ते हैं -

**लूका 17:37**

यह सुन उन्होंने उस से पूछा, "हे प्रभु यह कहां होगा?" उसने उनसे कहा, "जहां लोथ हैं, वहां गिद्ध इकट्ठे होंगे।"

यहाँ पर यीशु क्या कह रहे हैं? उसके बाद हम इस वचन में से पढ़ते हैं -

**2 कुरिन्थियों 12:2-4**

"मैं मसीह में एक मनुष्य को जानता हूं; चौदह वर्ष हुए कि न जाने देहसहित, न जाने देहरहित, परमेश्वर जानता है; ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग तक उठा लिया गया। मैं ऐसे मनुष्य को जानता हूं न जाने देहसहित, न जाने देहरहित परमेश्वर ही जानता है कि स्वर्ग लोक पर उठा लिया गया, और ऐसी बातें सुनीं जो कहने की नहीं; और जिन का मुंह पर लाना मनुष्य को उचित नहीं।"

ये तीसरा स्वर्ग क्या है जिसके बारे में पौलुस बता रहे हैं? उसके बाद हम इस वचन में से पढ़ते हैं-

**प्रकाशितवाक्य 13:18**

"ज्ञान इसी में है: जिसे बुद्धि हो वह इस पशु का अंक जोड़ ले, क्योंकि वह मनुष्य का अंक है, और उसका अंक छः सौ छियासठ है।"

666 अंक का क्या मतलब है? कौन है ये?

इन सारे प्रश्नों का उत्तर बाइबल में ही है!!
और हाँ! जो ढूंढते हैं उन सब के लिये यह धन्य आशीष है -

**यूहन्ना 8:32**

"तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा ... "

यदि आपको ये विषय दिलचस्प लगे हों, और आप बाईबल को और बेहतर समझना चाहते हैं तो हमने बाईबल के विषयों को क्रमानुसार नीचे लिखा है -

## 50 से भी ज्यादा विषय !!

| | |
|---|---|
| 0. कुछ आरम्भ की बातें | 28 भविष्यद्वाणी की कुंजियाँ– सत्तर हफ्ते और अन्यजातियों का समय |
| 1. बाईबल को खोलने की चाबियाँ | 29 नामन की सात डुबकियाँ |
| 2. क्रूस का रहस्य - भाग -1 | 30. बाइबल में फसल काटने का समय (बाईबल की कटनी ) |
| 3. क्रूस का रहस्य - भाग -2 | 31. तम्बू का अध्ययन |
| 4 युगों की दिव्य योजना - भाग -1 (पहला संसार ) | 32 प्रायश्चित के दिन का बलिदान |
| 5 युगों की दिव्य योजना - भाग -2 (दूसरा और तीसरा संसार ) | 33 वाचा का अध्ययन |
| 6. निश्वास | 34. प्रार्थना पर पाठ |
| 7. हमारा अति पवित्र विश्वास | 35. मसीह विरोधी का अध्ययन - भाग - 1 |
| 8. पाँचवा सार्वलौकिक राज्य - परमेश्वर का राज्य | 36. मसीह विरोधी का अध्ययन - भाग - 2 |
| 9. तीन मार्ग | 37. मसीह विरोधी का अध्ययन - भाग - 3 |
| 10. परमेश्वर बुराई की अनुमति क्यों देते हैं ? | 38. शैतान - हमारा विरोधी |
| 11. पुराने नियम का महत्व | 39. जुबली का कानून |
| 12. मनुष्य की आत्मा - भाग -1 (एक सिद्धान्त) | 40. चार रथों की पढ़ाई |
| 13. मनुष्य की आत्मा - भाग -2 (बाईबल संबंधी प्रतिवाद ) | 41. नई सृष्टि का रहस्य |
| 14. धनी व्यक्ति और लाजर | 42. यीशु के दूसरे आगमन से जुड़ी जन-साधारण अपेक्षाएँ (रैप्चर और अन्य लोकप्रिय धारणाएँ) |
| 15. अधोलोक या नर्क की सत्यता | 43. दूसरे आगमन का अध्ययन (परोसिया / एपिफेनिया & अपोकलुप्सिस ) |

| | |
|---|---|
| 17. मसीह की कलीसिया - भाग -1 | 45. कलीसिया का इतिहास<br>(सात कलीसियाएँ और सात दूत ) |
| 18. मसीह की कलीसिया - भाग -2 | 46. दस चाँदी के सिक्कों का रहस्य |
| 19. मसीह की कलीसिया - भाग -3 | 47. विश्वयुद्ध (आर्मगेडन) और संसार का अंत |
| 20. महान पिरामिड और बाईबल | 48. हमारे प्रभु का भोज |
| 21. स्त्री का बीज और सर्प का बीज | 49. अन्यभाषाओं में बोलना , चमत्कार करना ,<br>दर्शन और भविष्यवक्ता |
| 22. बाइबल कालक्रम और इतिहास<br>का अध्ययन | 50. भविष्यद्वाणी में इस्राएल |
| 23. त्रिदेव का अध्ययन - भाग -1 | 51. दिव्य बुलावा |
| 24. त्रिदेव का अध्ययन - भाग -2 | 52. युगों के चार्ट की व्याख्या<br>(A - Z) |
| 25. त्रिदेव का अध्ययन - भाग -3 | 53. मसीही बपतिस्मा |
| 26. अदन की वाटिका की चार नदियां | |
| 27. चौबीस प्राचीन | |

**बाईबल के सभी पाठ नोट्स के साथ उपलब्ध करायें जायेंगे।**

यदि दिलचस्पी है तो कृपया हमें बताएं और हम आपको ये पाठ भेजना आरम्भ कर देंगे,
ई-मेल के या डाक के द्वारा या आपके घर आकर ताकि ये साप्ताहिक पाठ्यक्रम आरम्भ हो सके।

अन्य विषयों पर और अधिक अध्ययन के लिए

सम्पर्क करें: Christ Kingdom

ई-मेल: thekingdomgospel2874@gmail.com